#### GAEKWAD'S ORIENTAL SERIES

Published under the Authority of the Government of His Highness the Maharaja Gaekwad of Baroda.

General Edutor

B BHATTACHARYYA, M. A., PH D.

Röyaratna

No. LIV

## जयाख्यसंहिता

F Creation and Uploading by: iri Parshad Das (HPD) i 14 January 2014.

# विषयानु क्रमणी-

| विषया:   |             |             | पत्रसङ्ख्या |
|--|-------------|-------------|-------------|
| पटलः (   | १).         |             |             |
| शास्त्रावतरणम्                                       | ••••        |             | ?19         |
| निःश्रेयसालाभान्महर्षीणौ निर्वेदः                    |             | ••••        | 7           |
| असति परतत्त्वज्ञाने निःश्रेयसस्य दुर्लभता            |             |             | २           |
| परतत्त्वविवेचनम्                                     |             | ***         | 3           |
| परतत्त्वाधिगमोपायजिज्ञासया शाण्डिल्य प्रत्यभि        | गमनम्       |             | ş           |
| भगवत्तत्त्वतद्।राधनप्रकारप्रश्नः                     |             |             | 8           |
| जयाख्यस्यास्य शास्त्रस्य प्रवृत्तिक्रमः              |             |             | 8           |
| श्रद्धापूर्वकमुपसन्नस्यैव शास्त्रोपदेशपात्रता        | •••         |             | 4           |
| शास्त्रार्थोपदेशकस्य गुरोर्माहिमा, तद्भक्तेः श्रेयःस | ाधनखं च     |             | \$          |
| अस्य शास्त्रस्यारम्भकाल-प्रवर्तकपुरुषविशेष-आर        | ब्याविशेषाण | ां निरूपणम् | ৩           |
| पटलः (   | ₹).         |             |             |
| ब्रह्मसर्गाख्यानम्                                   |             |             | १९—२४       |
| नारदकृता भगवत्स्तुतिः                                |             | ****        | 19-70       |
| सृष्टिप्रलयकालमेदनिरूपणम्                            |             |             | 23          |
| नामिकमलाचतुर्भुखसृष्टिः                              | •••         |             | २१          |
| चतुर्मुखेन रजोगुणयोगेन कृता विविधसृष्टि.             |             | • • • • •   | 25          |
| मधुकैटमासुरयोरुत्पत्तिः, ताभ्या कृतः सर्वलोक         | विजयः       |             | २२२३        |
| तःकृतवेदापहरणेनाधर्माभिवृद्धिः                       | ••••        |             | 73          |
| मुनिभि: कृत चतुर्मुखस्योद्वोधनम्                     | •••         | ••••        | २३          |
| मुनिभिरुद्वोधितेन चतुर्मुखेन कृता भगवतः स            | तुतिः       | ***         | २३          |
| भगवता कृतमभयदानम्                                    |             |             | 78          |
| भगवता कृत वेदानामुद्धरणम्                            |             |             | 78          |
| भगवदनुप्रवेशाच्चतुर्मुखस्य वेदावधारणम्               |             |             | 28          |
| मधुकैटभनिरसनम्                                       |             |             | 28          |
| मेदिनीशब्दनिर्वचनम्                                  |             |             | 28          |

| विषया:  | r , ]                   |                   | विस्मालका      |
|---|-------------------------|-------------------|----------------|
|   | लः (३).                 |                   | पत्रसङ्ख्या    |
| <b>प्राधानिकसर्गनिरूपणम्</b>                    |                         |                   | 29-20          |
| गुणत्रयमयात् प्रधानात् महदादितत्त्वान           | ामुत्पात्तः             |                   | 29             |
| चेतनानधिष्ठितयोर्जडयोर्मिथो हेतुहेतुमङ्         |                         |                   | २५—२६          |
| •निदर्शननिरूपणमुखेन तदाशङ्कानिवार               | गम्                     |                   | २६             |
| अचेतनस्य चेतनकार्ययोगोपपादनम्                   |                         |                   | २६             |
| चिदचितोः सयोगे वियोगे च हेतूपपादः               | नम्                     |                   | २ <b>६</b> —२७ |
| पट  | लः (४).                 |                   |                |
| शुद्धसर्गाख्यानम्                               |                         |                   | २७—३८          |
| परस्माद्रह्मणो वासुदेवात्परमेश्वरादच्युताव      | रीनां प्रादुर्भाव.      |                   | २७२८           |
| पुरुषात्मनाऽऽविभूतस्य वासुदेवस्य सर्वा          |                         |                   | 2 <            |
| पुरुपसत्याच्युतानामुत्तरोत्तरमभिन्नाना व        |                         |                   | 24             |
| चिन्मयस्य वासुदेवस्य ततः प्रादुर्भूताना         |                         |                   |                |
| स्थूलसूक्ष्मपरात्मना परब्रह्मणस्त्रेधा स्थिति   |                         |                   | 79             |
| मोगमोक्षहेतुभूताया मन्त्ररूपाया मूर्ते.         |                         | धाऽवस्थितिः       | ३०             |
| मन्त्रतद्वीर्यादिज्ञानस्य ब्रह्मज्ञानमूलकत्वेन  | ब्रह्मज्ञानस्यावस्यं सं | पादनीयता          | 30             |
| ज्ञानस्य त्रियाख्यसत्ताख्यभेदेन द्वैविध्यम्     | , तत्र क्रियाख्यस्य स   | तत्ताख्ये हेतुतां | 3 !            |
| क्रियाख्यस्य यमनियमभेदेन द्वैविध्यम्            |                         |                   | 3 8            |
| सत्ताद्ध्यज्ञानात् त्रद्योपसपत्तिहेतुभूतज्ञानोत | पत्तिः                  |                   | ३२             |
| ब्रह्माभि <b>न्न</b> त्वप्रकारोपपादनम्          |                         |                   | 39             |
| अविद्यास्वरूपनिरूपणम्                           | ****                    | ••••              | 37             |
| आत्मखरूपनिरूपणम्                                | ••••                    | •                 | 37             |
| ब्रह्मस्वरूपनिरूपणम्                            |                         |                   | 37             |
| सनिद्शनमुपासकाना ब्रह्मसपत्तिनिरूपण             | म्                      |                   | ३७             |
| पट  | <b>लः</b> (५).          |                   |                |
| ब्रह्मज्ञानोत्पत्त्याख्यानम्                    |                         | 3                 | 88-            |
| ज्ञानस्य योगाभ्यासैकलभ्यता                      |                         |                   | 34             |
| मगवच्छक्तिसामर्थ्यादात्मस्वरूपाजेज्ञासोदय       | ı:                      |                   | 36             |
| विविदिषयोपसन्नस्य शिष्यस्य यथाधिकार             |                         |                   | 39             |

## [ १ ]

|                                    |                        | L 7 J                     |            |             |
|------------------------------------|------------------------|---------------------------|------------|-------------|
| विषया                              |                        |                           |            | पत्रसङ्ख्या |
| मन्त्राराधने प्रवृत्तस्य ज्ञानो    | दयप्रकारः              | ••••                      |            | \$6         |
| ब्रह्मणो दुरवबोधत्वम्              |                        |                           |            | ३९          |
| मन्त्रोपासनस्य सुकरोपायत्व         | <b>म्</b>              | ••••                      | ****       | 36          |
|                                    | पटर                    | <b>तः</b> ( ६ ).          |            |             |
| मुरूयम <b>न्त्रोद्धारः</b>         |                        |                           |            | ४१—६०       |
| मातुकापीठपरिकल्पना                 |                        | ****                      | ••••       | 8 8         |
| अष्टवर्गात्मनाऽवस्थितेषु अव        | तारादिक्षकारा <b>न</b> | तेषु वर्णेषु विमाव्यो     | भगवतः      | *           |
| स्थितिभेद:                         |                        | ****                      |            | 83          |
| अक्षराणां भगवन्मातृकादेहत          | वेन विभाव्यत           | TI .                      |            | 85          |
| वर्णमातृकायाः स्वविग्रहे न्या      |                        |                           |            | 83          |
| मातृकाचकोद्धारकमः                  |                        | ••••                      |            | 83          |
| मातृकापूजनप्रकारः                  |                        |                           |            | 83          |
| अकाराद्यक्षराणा संज्ञाभेदः         |                        |                           |            | 83-89       |
| मूलमन्त्रोद्धारः                   |                        |                           |            | 89-88       |
| मूळमन्त्रमहिमा                     |                        |                           |            | 88          |
| म्लमन्त्रप्रतिपाद्यदेवताध्यानम्    | _                      |                           | •••        | •           |
| लक्ष्म्यादीना भगवस्वरूपे निल       | ्<br>सान्निध्यं तास    | ••••<br>गंस्वरूपस्वभावनिक | <br>aar ≠r | 8 €         |
| लक्ष्म्यादीनां ध्यानप्रकारः        |                        |                           | યુગ પ      | 80          |
| लक्ष्मीमन्त्रः                     |                        | ••••                      |            | 80          |
| ळ्दमामन्त्रः<br>कीर्तिमन्त्रः      | •••                    | ••••                      | ****       | 8 <         |
|                                    | ****                   | ••••                      | ••••       | 8 <         |
| जयामन्त्रः                         | ••••                   | ••••                      | ••••       | 85          |
| मायामन्त्रः                        | ••••                   | ••••                      | ••••       | 86          |
| हृन्मन्त्रः                        | ****                   | ••••                      | ••••       | 86          |
| शेरोमन्त्रः                        | ••••                   | ••••                      | ••••       | 86          |
| शेखामन्त्र:                        | ••••                   | ••••                      | ••••       | 90          |
| तवचमन्त्र:                         | ••••                   | ****                      |            | 90          |
| त्रिमन्त्रः                        | ••••                   | ••••                      | ••••       | 90          |
| मस्त्रमन्त्रः                      | ••••                   | ***                       |            | 98          |
| र्पिहाद्यास्यत्रयेषु नृसिंहमन्त्रः | ••••                   | ••••                      |            | 98          |
|                                    |                        |                           |            |             |

|                                  | L .             | - 1                             |         |                |
|----------------------------------|-----------------|---------------------------------|---------|----------------|
| विषया •                          |                 |                                 |         | पत्रसङ्ख्या    |
| कापिलमन्त्रः                     |                 | ••••                            |         | 99             |
| वराहमन्त्रः                      |                 | ••••                            | ••••    | 97             |
| कै।स्तुममन्त्रः                  | ••••            |                                 | ••••    | 99             |
| मालाभन्त्रः                      | ****            | ***                             |         | 93             |
| पद्ममन्त्रः                      |                 |                                 | ****    | 93             |
| शङ्कमन्त्रः                      |                 | ••                              |         | 93             |
| चक्रमन्त्रः                      | ••••            |                                 | ***     | 48             |
| गद्।मन्त्र:                      |                 | ••••                            |         | 48             |
| गरुडमन्त्रः                      |                 | •. •.                           | ••••    | 48             |
| पाशमन्त्रः                       |                 |                                 |         | 99             |
| अङ्कुशमन्त्रः                    | ••••            | ••••                            |         | 99             |
| उपाद्गपञ्चकमन्त्राः              |                 |                                 | ••••    | 99-98          |
| म्लमन्त्रपूर्वावयवभूतानिष्कलाः   | शस्य परमन्त्रः  | वोपपादनम्                       | ••••    | 98-90          |
| सविन्मयात्परतरान्मन्त्राणां प्र  | ादुर्भावः       |                                 |         | 90             |
| ब्यापकमन्त्रानिरूपणम्            |                 |                                 | ••••    | 90             |
| अविकारस्य व्यापकस्य परस्य        | ब्रह्मणो मन्त्र | देहत्वा <b>नु</b> पपत्याशङ्कापा | रिहरणम् | 96             |
| स्थूलसूक्ष्मोभयात्मकस्य त्र्यक्ष |                 |                                 |         | 99             |
|                                  | पटर             | छ: (७).                         |         |                |
|                                  |                 |                                 |         |                |
| <b>उपकरणमन्त्रोद्धारः</b>        | ••              |                                 |         | € 0—€ <b>९</b> |
| आधारशक्तिमन्त्रः                 | ••••            |                                 | •••     | <b>&amp;</b> o |
| कूर्ममन्त्रः, तद्ध्यानम्         | ••••            |                                 | •••     | ६०             |
| अनन्तमन्त्रः, तद्भ्यानम्         | (*10*0)         | 100 30                          | ••••    | Ęo             |
| धरामन्त्रः, तद्भवानम्            |                 |                                 |         | ٤ ٢            |
| क्षीरोदमन्त्रः, तद्धवानम्        |                 | ••••                            |         | ६१             |
| पद्ममन्त्रः, तद्धचानम्           | •••             | ****                            | ••••    | ६१             |
| धर्माद्यासनमन्त्राः              |                 | ••••                            | ••••    | ६१—६२          |
| सितपद्ममन्त्रः                   | ••••            | ••••                            | ••••    | <b>६</b> २     |
| धामत्रयमन्त्राः                  |                 |                                 | ••••    | <b>\$</b> ?    |
| भावासनमन्त्रः                    |                 | ••••                            |         | 83             |
|                                  |                 |                                 |         |                |

|  |            | • 1    |   |               |
|--|------------|--------|---|---------------|
| विषया:                                   | _          | -      |   | पत्रसङ्ख्या   |
| क्षेत्रपालमन्त्रः, तद्धवानम्             |            |        |   | ६२            |
| <b>%यादीनां पद्मनिध्यन्ताना मन्त्राः</b> | , तद्धचानम | Ţ      |   | ६२—६३         |
| गणेशमन्त्रः, तद्धवानम्                   |            |        |   | ६३            |
| मत्स्यमुद्रा                             |            |        | ••••                                    | <b>१</b> ३    |
| वागीश्वरीमन्त्रः                         |            |        |   | € 8           |
| वागीश्वर्या ध्यानम्                      |            | •••    |   | € 8           |
| गुरुपरमगुर्वादिमन्त्राः                  |            |        |   | € 8           |
| पितृ <b>मन्त्रः</b>                      |            | ••••   |   | <b>E</b> 9    |
| पूर्वसिद्धमन्त्रः                        |            | •••    | ****                                    | ६५            |
| वज्रादिलोकेशायुधमन्त्राः                 |            |        | ••••                                    | ६६            |
| विष्वक्सेनमन्त्रः                        |            |        |   | ξ <b>ξ</b> ξ0 |
| आवाहनाद्यौपचारिकमन्त्रपश्चकः             | ξ,         |        |   | ६७−६८         |
| सुराभिमन्त्रः                            |            |        |   | ६८—६९         |
| मन्त्राणा गोपनीयता                       |            |        |   | ६९            |
| मन्त्राणामपात्रे विनियोगस्यानर्थ         | विहता      |        |   | <b>१</b> ९    |
|  | ਜ਼ੁਕੜਾ     | ( 6 ). |   |               |
|  | 4500       | ( 0 ). |   | Manual Money  |
| मुद्राबन्धनि रूपणम्                      | ••••       |        |   | ६९—७९         |
| मुद्राबन्धकालः तत्प्रयोजन च              | ****       | ••••   | • | 90            |
| जयामुद्रा                                | ••••       | ••••   |   | 90            |
| शक्तिमुद्रा                              | ••••       |        |   | 90            |
| हृद्यमुद्रा                              | ****       |        |   | 90            |
| शिरोमुद्रा                               |            | •••    | ****                                    | ৬০            |
| शिखामुद्रा                               |            |        | •••                                     | 9             |
| कवचमुद्रा                                |            | ••••   | ***                                     | 98            |
| नेत्रमुद्रा                              |            | ••••   | •••                                     | 90            |
| अस्त्रमुदा                               |            |        |   | ७१            |
| सिहमुद्रा                                |            | ••••   |   | ७१            |
| कपिलमुद्रा                               |            | ••••   | ****                                    | ७२            |
| क्रोडमुदा                                |            | ••••   |   | ७२            |
|  |            |        |   |               |

## [१]

|                               |      | L < J |      |             |
|-------------------------------|------|-------|------|-------------|
| विषया:                        |      |       |      | पत्रसङ्ख्या |
| कौस्तुभमुदा                   | •••  |       | •••  | 90          |
| मालामुद्रा                    |      | ••••  | •••  | ७२          |
| पद्ममुद्रा                    |      | ••••  | •••• | 90          |
| शङ्कमुद्रा                    |      | ••••  | •••• | ७२          |
| चक्रमुदा                      |      | ****  | •••• | ७३          |
| गदामुद्रा                     |      |       | •••• | ७३          |
| पक्षिराजमुद्रा                | •••• | ••••  | •••  | 40          |
| पाशमुद्रा                     | •••  | ••••  | •••• | ७३          |
| <del>अङ</del> ्करामुद्रा      |      | ••••  | **** | ७३          |
| सत्यादिमुद्रापञ्चकम्          | **** | ••••  | •••• | 98          |
| महाजयामुद्रा                  |      | ••••  |      | 98          |
| आधारशक्तिमुद्रा कूर्ममुद्रा च |      |       |      | 98          |
| अनन्तासनमुद्रा                |      | ****  |      | 98          |
| पृथिवीमुद्रा                  |      |       | •••• | ७९          |
| समुद्रमुद्रा                  |      |       |      | ७९          |
| धर्मादिचतुष्टयमुद्रा          |      |       |      | ७९          |
| धामत्रयमुद्रा                 |      |       |      | ७ई          |
| हसमुद्रा                      |      |       |      | ७६          |
| क्षेत्रेशमुद्रा               |      | ••••  |      | ७६          |
| श्रीमुद्रा                    |      |       | •••• | ७६          |
| चण्डमुदा                      |      | ••••  | •••  | ७६          |
| प्रचण्डमुद्रा                 |      | ••••  | •••• | ७६          |
| जयमुद्रा .                    | •••• | ****  |      | ७६          |
| विजयमुद्रा                    |      |       |      | ७६          |
| गाङ्गमुद्रा                   |      |       | •••  | ७६          |
| या <b>मुन</b> मुद्रा          |      |       |      | ७७          |
| शङ्क्वनिधिमुद्रा              |      |       |      | ७७          |
| पद्मनिधिमुद्रा                |      | ••••  | ,    | 99          |
| गणेशमुद्रा                    |      | ••••  | •••• | 90          |
| वागिश्वरीमुद्रा               | **** | ••••  | •••• | ७७          |
|                               |      |       |      |             |

|                               | L             |                                  |           |                     |
|-------------------------------|---------------|----------------------------------|-----------|---------------------|
| विषयाः                        |               |                                  |           | पत्रसङ्ख्या         |
| गुरुमुद्रा                    | •••           | ••••                             | ••••      | 90                  |
| पितृगणमुद्रा                  | ****          | •••                              |           | 94                  |
| सिद्धमुद्रा                   | ••••          | ••••                             | ••••      | 96                  |
| वराभयमुद्रे                   | ••••          | ****                             |           | 96                  |
| विष्व <del>क</del> ्सेनमुद्रा |               |                                  |           | 96                  |
| आवाहनमुद्रा                   | ••••          | ••••                             | ••••      | 96                  |
| विसर्जनमुद्रा                 | ••••          | •••                              | ••••      | 96                  |
| सुरभिमुद्रा                   |               | ••••                             |           | 96                  |
|                               | पटल           | 5: ( <b>९</b> ).                 |           |                     |
| स्नानविधानम्                  |               |                                  |           | 69                  |
| शौचविधिः                      |               |                                  | • • • • • | ७९—८०               |
| स्नानार्थ मृत्सङ्ग्रहणम्      |               |                                  | ••••      | (0                  |
| लौकिक <del>स्</del> नानम्     |               | ••••                             | ••••      | <0                  |
| औदकं विधिस्नानम्              |               | ••••                             |           | <o<8< td=""></o<8<> |
| मन्त्रस्नानम्                 |               |                                  |           | <8                  |
| ध्यानस्नानम्                  |               | ••••                             |           | <8                  |
|                               | पटल           | ( १०).                           |           |                     |
| समाधिरूयापनम्                 |               |                                  |           | ८५—९६               |
| ध्यानार्थे निर्जनस्थानं प्रति | गन्तव्यता     | ••••                             |           | <b>८</b> ٩          |
| स्थानप्राप्तिसमये कर्तव्यांश  | :             | ••••                             |           | <9                  |
| दर्भाद्यासनविकल्पः            |               | ••••                             |           | <9                  |
| आचार्यपरम्परानुस्मरणम्        |               | ••••                             | ••••      | <9                  |
| आसनशुद्धिः                    |               |                                  |           | ८६                  |
| करग्रुद्धिः                   |               | ••••                             |           | < €                 |
| स्थानञ्जद्धेरवश्यकर्तव्यता    |               | ••••                             | ••••      | < €                 |
| पृथिव्यादिभूतानां बीजमन्त्र   | π:            |                                  |           | <b>८</b> ६          |
| पृथिव्यादिभूतानां देवताः      |               | ••••                             |           | (9                  |
| पृथिव्यादिभूतानां स्वस्वका    |               |                                  | •••       | <0<9                |
| गन्धादिशक्तिचतुष्टयलयास्प     | दभूतायाः शब्द | शक्तेर्निष्कले <b>ऽ</b> नुप्रवेश | ाभावनम्   | ८९                  |
|                               |               |                                  |           |                     |

| विषयाः                                   | [ - ]                    |             | पत्रसङ्ख्या |
|--|--------------------------|-------------|-------------|
| जीवस्य स्थूलदेहतो बहिर्निर्गत्य परे म    | न्त्रमूर्ती प्रभाचक्रविः | शेषावस्थिते | गनवत् या    |
| परमात्मिन विश्रान्तत्वेन भावना           |                          |             | ٧.          |
| स्थूळदेहस्य मन्त्रजन्याग्निना दहनभावनम्  |                          |             | 98          |
| इच्छाग्निमन्त्रः                         |                          |             | 68          |
| भस्मीभूतत्वभावनम्<br>भस्मीभूतत्वभावनम्   |                          | ••••        | 68          |
| शान्ताग्निमन्त्रः                        |                          |             | 68          |
| मस्भीभूततया भावितस्य ध्यानसमुद्भृतसी     | लेलेनापावनभावना          | ••••        |             |
| समाष्ट्रावनमन्त्रः                       | ज्जालानामान <u>ा</u>     | ••••        | 99          |
| अपूर्वतेजोमयाजरामरणशरीरसृष्टिभावनाक्र    |                          |             | 68          |
|  |                          | ••••        | ९१—९२       |
| सृष्टतया भाविते तेजोमये मान्त्रे शरीरे ज | विस्य प्रवशभावना         |             | 65          |
| आत्ममन्त्रः                              | * *                      | •••         | 65          |
| स्वदेहस्य मन्त्रमयतापादनम्               | ••••                     |             | 99          |
| पटलः                                     | ( 88 )                   |             |             |
| मन्त्रन्यासविधिः                         |                          |             | ९३—९६       |
| आसनपरिकल्पनम्                            |                          |             | 93          |
| प्राकारपरिकल्पनम्                        |                          |             | ९३          |
| न्यासप्रयोजनम्                           |                          |             | 68          |
| हस्तन्यासः                               |                          |             | 68          |
| देहन्यासाद्धस्तन्यासस्य प्राथम्ये कारणम् |                          | • • •       |             |
| देहन्यासः                                | ••••                     |             | ९५          |
| तत्तन्मुद्राप्रदर्शनम्                   |                          | ••••        | 99          |
| साधकेन कर्तव्यध्यानप्रकारः               |                          | •••         | ९६          |
| तावकान कत्वव्यानप्रकारः                  | ••••                     | ••••        | €,€         |
| पटल:                                     | ( १२ ).                  |             |             |
| मानसयागविधिः                             |                          | e           | 309-0       |
| मानसयागोपक्रमे अवयवविभागराः स्थानभेव     | न आधारशक्त्यादिप         | प्रान्ताना  | . ,         |
| कल्पनाप्रकारः                            |                          |             | ९७          |
| पद्मस्योपरि पीठपरिकल्पनम्                |                          |             | ९७          |
| तस्य पाँठस्य धर्मादिषोडशपादपरिकल्पनम्    |                          | •••         | 90          |
| धर्मादिपीठस्योपरि सितकमलाद्यासनपञ्चकस्य  | आनाभिहतयान्त्र प्राप्त   | गावि सन्तर  | TETT: 9.4   |
|  |                          | उनार कल्पना | प्रकारः ५८  |

|                                       | L .                          | J                            |           |             |
|---------------------------------------|------------------------------|------------------------------|-----------|-------------|
| विषया'                                |                              | 060                          |           | पत्रसङ्ख्या |
| <b>बाधारशक्तिप्रमृतिपक्षिराजान्ते</b> |                              | पञ्चकप्रभृतीश्वरप            | यन्तान    | ř.          |
| तत्त्वाना ऋमाद्याप्तिः                |                              | ****                         |           | ९८          |
| मन्त्रात्परतरात्मना, परसूक्ष्मोभय     | गत्मनाऽवा <del>रि</del> थतमन | त्रात्मना, <b>स्</b> थूलात्म | ना च      |             |
| ऋमशो विष्णोध्यीनविष                   | वानम्                        |                              |           | ९८—९९       |
| मन्त्रमूर्तेस्तस्य विष्णोः प्रभावव    | र्णनम्                       |                              | • • • • • | ९९          |
| लक्ष्म्यादिाभिः सहैव तस्य पूज्यत      | ना -                         |                              |           | ९९          |
| भगवच्छक्तिभूतानां लक्ष्म्यादीन        | ां धर्मज्ञानाद्यष्टकप्र      | योजकत्वम्                    |           | ९९          |
| हृत्पुण्डरीकमध्येऽवस्थापितस्य         | मन्त्रात्मनः परस्य           | चैतन्यजोतिषो वि              | वेष्णोः   |             |
| प्रभाविशेषस्योपासकश                   |                              |                              |           | 900         |
| पृथिव्यादिषूपलभ्यमानाना स्थैय         | दिगुणाना मन्त्रम             | ग़्तिभूतपरमात्मैका           | श्रयत्वम  | 100         |
| मुद्रामन्त्रपूर्वकमावाहनम्            |                              |                              |           | १०१         |
| आवाहितस्य तस्य समुखीकरण               | म्                           |                              | •••       | 808         |
| विस्तरेण मानसयागारम्भः                | •••                          |                              |           | 909         |
| लक्ष्म्यादिपूजने लययाग-मोगय           | ाग–अधिकारयाग                 | ामेदेन त्रैविध्यम्           |           | 809-803     |
| भोगयागार्थ हृत्पद्मे सर्वमन्त्राणां   | विन्यासऋमः                   |                              | ••••      | 803         |
| विशेषपूजनम्                           |                              |                              |           | १०५         |
| मानसहोमाविधानम्                       |                              |                              |           | 909-908     |
|                                       | पटलः (१                      | ₹).                          |           |             |
| बाह्ययागविधिः                         |                              |                              | •••       | 900-979     |
| बाह्ययागप्रयोजनम्                     | ••••                         | ****                         | ••••      | १०७         |
| मण्डलविन्यासः                         | ••••                         | •••                          | •••       | 904-908     |
| मण्डले प्रकारभेदः फलभेदश्च            | ••••                         | ****                         |           | १०९         |
| कुम्भादीनामपि बाह्ययागप्रदेशत         | त्रविधानम्                   | •••                          |           | 199-199     |
| अर्ध्यद्रव्याणि                       |                              |                              |           | 999         |
| अर्घ्यस्य विनियोगक्रमः                | ••••                         | •••                          | • • • •   | 199         |
| द्वारपूजा                             |                              |                              |           | 199         |
| द्वारदेवतापूजा                        | ••••                         | •••                          | ••••      | ११२         |
| यागमन्दिरप्रवेशविधिः                  |                              | ••••                         |           | ११३         |
| पूजाङ्गभूतावेक्षणप्रोक्षणे            |                              |                              |           | 183         |
| आधारशक्त्याद्यासनकल्पनतत्यू ज         | नप्रकारः                     | ****                         | ••••      | 118         |
|                                       |                              |                              |           |             |

## [ ? 0 ]

| विपया                                   |                       |                   |        | पत्रसङ्ख्या |
|---|-----------------------|-------------------|--------|-------------|
| गणेशादिपूजनम्                           | ••••                  | ****              | •      | 8 3 8       |
| मानसयागे हृदयकमले स्थापित               | त मन्त्रमूर्ति भ      | ागवन्त ततोऽवतार्य | प्रथमं |             |
| तस्य बहिर्छययागोक्ती                    | वेधिना पूजन           | विधानम्           |        | 8 8 8       |
| भोगयागार्थ मण्डले मन्त्रन्यास           | विधि:                 |                   | ••••   | ? 89        |
| हुन्मन्त्रध्यानम्                       |                       |                   |        | 238         |
| शिरोमन्त्रध्यानम्                       |                       | 200               |        | 199         |
| शिखामन्त्रन्यानम्                       |                       | ****              |        | ११७         |
| कवचमन्त्रध्यानम्                        |                       |                   |        | ११७         |
| नेत्रमन्त्रध्यानम्                      |                       |                   |        | ११७         |
| अस्त्रमन्त्रध्यानम्                     |                       | ***               |        | ११७         |
| नृतिहमन्त्रध्यानम्                      |                       |                   |        | 388         |
| कपिलमन्त्रध्यानम्                       |                       |                   |        | 298         |
| वराहमन्त्रध्यानम्                       |                       |                   |        | 388         |
| कौस्तुभादिभन्त्रध्यानम्                 |                       |                   | ,,     | 186         |
| गरुडध्यानम्                             |                       |                   |        | 236         |
| पाशाङ्कु शयोर्ध्यानम्                   |                       |                   |        | 198         |
| सत्यादिपञ्चकध्यानम्                     |                       |                   |        | ११९         |
| सप्ताक्षरमन्त्रध्यानम्                  | •••                   |                   | ••••   | 198         |
| न्यासऋमेण मन्त्रगणस्य बाह्यः            | यजनम्                 |                   |        | १२०         |
| पुष्पाञ्जलिप्रकारः                      |                       |                   |        | १२०         |
| घूपपात्रविधिः                           |                       |                   | ****   | १२१         |
| <b>धूपपात्रमन्त्रविदानम्</b>            |                       | ••••              |        | १२१         |
| घण्टाचालनविधानम्                        |                       |                   |        | १२२         |
| घण्टा <b>ना</b> दप्रभा <b>व</b> वर्णनम् |                       | ***               |        | १२२         |
| मन्त्रशब्दिनिरुक्तिः                    |                       |                   |        | १२२         |
| आवाहनाद्युषचारेषु घण्टाचाल              | <b>नस्</b> य कर्तब्यत | TI                |        | १२२         |
| पूजाकालादन्यत्र वण्टाचालनः              | प्रतिषेधः             |                   |        | १२३         |
| वण्टामन्त्रनिरूपणम्                     |                       |                   |        | १२३         |
| वण्टाध्यानप्रकारः                       |                       |                   |        | १२३         |
| <b>लक्ष्म्यादिमन्त्राणामभ्यर्चनम्</b>   | ••••                  | ****              |        | 193         |
|   |                       |                   |        |             |

#### [ ११ ]

|  | L          | , , ,                  |        |            |
|--|------------|------------------------|--------|------------|
| विषया:   |            |                        |        | पत्रसद्भया |
| स्तुतिविधानम्  |            |                        |        | 8 5 8      |
| मधुपर्कादिसमर्पणप्रकारः                              |            |                        |        | १२४        |
| बाह्ययागपरिसमापनप्रकारः                              |            |                        |        | 8 7 8      |
|  | पटल        | : ( {8} )              |        |            |
| जपविधिः  |            | •                      |        | १२९-१३२    |
| जपस्य त्रैविध्यम्                                    |            |                        |        | १२५        |
| अक्षसूत्रे संयोज्याना मणीना                          |            | याद्रव्यमेदविधानम्     | ••••   | १२५        |
| मणीना क्षालनप्रकारः                                  |            |                        |        | १२६        |
| मणिग्रथनार्थं सूत्रविशेषविधान                        | म्         |                        |        | १२६        |
| सूत्रे मणीना योजनप्रकारः                             |            | •••                    |        | १२६        |
| अक्षसूत्रस्य वलयाकारताविधा                           | नम्        |                        |        | १२७        |
| अक्षसूत्रे मेरुकल्पनविधिः                            |            |                        |        | १२७        |
| अक्षसूत्रसशोधनविधानम्                                |            | ····                   |        | १२७        |
| अक्षसूत्रमन्त्र.                                     |            |                        |        | १२७        |
| वैष्णव्याः परशक्तेरक्षसूत्रे भा                      | वनाऋमविधा  | नम्                    |        | 199        |
| अक्षसूत्रमुद्रा                                      |            |                        |        | १२९        |
| जपात् प्राक् कर्तव्योऽनुसन्ध                         | ानविशेषः   |                        |        | १२९        |
| जामदादि भेदनिरूपणम्                                  |            | ****                   |        | १३०        |
| अक्षसूत्रे मन्त्रमूर्तेः सानिध्यः                    | क्रमभावनम् | ••••                   |        | 130        |
| जपसङ्ख्यासिद्धवर्थमक्षाणामेकै                        | क समाहरण   | विधानम्                |        | 830        |
| मेरोर्छङ्ख नप्रतिषेधः                                |            |                        |        | 838        |
| शान्तिकपौष्टिकादिनिमित्तभेदे                         | न भिन्नभिन | रूपतया मन्त्रस्य ध्यान | विधानम | १३१        |
| परापरभदेन जपस्य द्वैविध्यम्                          |            |                        |        | 128        |
| अधिकारिणा सत्त्वादिगुणभेते                           |            | मेदः                   |        | १३२        |
| अक्षसूत्रस्य पुनर्नवीकरण-प्रा                        |            |                        | ***    | १३२        |
| •              |            | हः ( १५ )              |        | 111        |
| अग्निकार्यविधिः                                      | 160        | 3. ( ( ) )             |        |            |
| कुण्डपरिकल्पनविधानारंभः                              |            | *****                  | ••••   | 137-198    |
| कुञ्डपारकस्पनाववानारमः<br>दिग्मेदेन कुण्डाना फलमेदाः | azar       | ****                   | •••    | १३३        |
| विनमदन कुण्डाना मलमदा                                | 1001       | ****                   | ••••   | १३३        |

## [१२]

|                                       | L                         | J                |          | T07507-10447-10 |
|---------------------------------------|---------------------------|------------------|----------|-----------------|
| विपया:                                |                           |                  |          | पत्रसङ्ख्या     |
| आहुतिसङ्ख्याभेदेन कुण्डाना म          | गानभेदः                   | ••••             |          | 8 2 3           |
| खातमानम्                              | 020                       |                  | ••••     | 8 78            |
| कुण्डमानभेदेन मेखलाना मान             | नमेदः                     |                  |          | १३४             |
| नाभिलक्षणम्                           |                           | ••••             | ••••     | 8 \$ 8          |
| कुण्डाना विकल्पः                      |                           | ****             |          | १३५             |
| कुण्डे हवनस्य प्राशस्त्यम्            |                           |                  |          | १३९             |
| कुण्डस्यासभवे हवनप्रकारः              |                           |                  |          | 139             |
| कुण्डसस्कारप्रकारः                    |                           |                  | 8        | ३९-१३६          |
| नाभिपूजनम्                            |                           |                  | •••      | १३६             |
| मेखलापूजनम्                           |                           |                  |          | १३६             |
| मेखलात्रये तत्त्वत्रयपूजनम्           |                           | •••              |          | १३६             |
| कुण्डमध्ये आधारशक्तयाद्या             | सनकल्पनापूर्वक            | नारायणाख्याया    | : शक्तेः |                 |
| स्थापनाप्रकारः।                       | 11711                     | ne de la         |          | १३६             |
| वह्रेरुत्पादनऋमः                      |                           |                  | •••      | १३७             |
| ताडनप्रोक्षणादयोऽग्नेबीह्याः          | सस्काराः                  |                  |          | १३७             |
| अग्नेः स्वात्मन्युपरामापादनपूर्व      | क सृष्टिक्रमेण प          | दालदमवतारितस     | य नाभिग- |                 |
| तत्वचिन्तनम्                          |                           | 10.00            |          | १३७             |
| नाभिकुण्डस्थतया भाविते ते             | जोविशेषे होमक्रम          | r:               |          | १३७             |
| तस्याप्नेर्नाभिकुण्डादुत्थापनम्       |                           | ****             |          | १३८             |
| अग्नेर्मन्त्रः                        |                           | •••              |          | 136             |
| नाभिकुण्डादुत्थापितस्याग्नेर्वाह      | ब्रेडम्रौ प्रक्षेपः       |                  |          | १३८             |
| पर्यग्निकरणपरिस्तरणे                  |                           |                  | ••••     | १३८             |
| प्रणीतापात्रेध्मस्त्रुक्स्त्रवाद्युपक | रणद्रव्यासाद् <b>न</b> म् |                  | ••••     | 139             |
| परिधिविधानम्                          |                           | ••••             |          | १३९             |
| ब्रह्मादिलोकपाला <b>र्चन</b> म्       |                           | •••              |          | १३९             |
| स्रुक्स्रुवयोः सस्कारः                |                           |                  |          | १३९             |
| सुक्सुवयोर्लक्षणम्                    |                           |                  |          | १३९-१४०         |
| कुण्डमध्यगतस्याग्नेर्गर्भाधाना        | दिसंस्कारदशकस्य           | कुण्डाद्वहि:स्थस |          | er can          |
| प्रोक्षणादिसस्कारपङ्                  |                           |                  |          | 188             |
|                                       |                           |                  |          |                 |

## [ १३]

| विषया   |                      |                     | पत्रसङ्ख्या |
|---|----------------------|---------------------|-------------|
| आज्यस्याधिश्रयणादि दशविधसस्कारविधानम                  | ξ                    | १                   | 887-887     |
| अप्नेर्गर्भाधानादिदशविधसस्काराणां प्रत्येक वि         | नेरूपणम्             | १                   | 83-688      |
| सस्क्रतस्याग्नेर्नारायणाःमकत्वेन भावनीयता             |                      |                     | 888         |
| संस्कृतस्याग्नेः पूजनप्रकारः                          | ••••                 |                     | 889         |
| वहेर्ध्यानप्रकारः                                     |                      |                     | 889         |
| व्योमवद्यापकतया भावितस्याग्नेर्मध्ये भगवतो            | यजनम्                | ••••                | 889         |
| अस्त्रादियजनम्  |                      | ••••                | १४५         |
| लक्ष्म्यादीना होमसङ्ख्याविधानम्                       |                      | ***                 | १४६         |
| जपानुगुण्येन होमस्य कर्तव्यता                         |                      |                     | १४६         |
| होमद्रव्यनिरूपणम्                                     |                      |                     | १४६         |
| होमद्रव्यमेदेन फलमेदः                                 |                      |                     | 188         |
| आहुतिप्रमाणभेदः                                       |                      |                     | 880         |
| स्वाहाकारादिप्रयोगभेदे निमित्तभेदनिरूपणम्             |                      | •••                 | 880         |
| पूर्णोहुतिप्रकार:                                     |                      |                     | 886         |
| अग्नेर्वणीदिभेदैः कर्मसिद्धेज्ञीतव्यता                |                      |                     | 886         |
| होमे प्रशस्तोऽग्निः                                   | •••                  | ***                 | १४९         |
| होमे वर्ज्योऽग्निः                                    |                      |                     | 186         |
| तिथिमेदेन फल्लमेदः                                    |                      |                     | १५०         |
| प्रभाद्यर्चिःसप्तके ऋमादेकैकस्मिस्तर्पितस्य मन        | त्रस्य फलभेदः        |                     | १९०         |
| अग्निमुद्रा   | ****                 | ****                | १५०         |
| मण्डले विन्यस्तस्य मन्त्रमूर्तेभेगवतो मूर्धनि पुष्प   | ।।ञ्जलिसमर्पणपूर्ववं | तं प्रार्थनाप्रकारः | 199         |
| मण्डले स्थापिताना मन्त्राणामुपसंहरणप्रकारि            |                      |                     | 8-898       |
| उपसहरणानन्तर दीक्षितेभ्यो नैवेद्यप्रदानस्य            |                      | ****                | १९२         |
| मूलमन्त्राभ्यर्चने विनियुक्तैः पुष्पाद्युपकरणैर्विष्व | क्सेनस्य मण्डलेऽ     | भ्यर्चनम्           | 899         |
| कु॰डे विष्वक्सेनस्य सन्तर्पणप्रकारः                   |                      |                     | 199         |
| विष्वक्सेनविसर्जनम्                                   |                      |                     | 193         |
| छोकपाछानां पूजनविसर्जने                               | •••                  | ****                | 193         |
| क्षेत्रपालादीना यजनम्                                 | •••                  | ••••                | 893         |
| वह्रेस्तर्पणप्रकारः                                   |                      |                     | १५३         |
| अग्नेः परिषेचनम्                                      |                      | ••••                | 893         |

## [ 88 ]

| विषया   | ,                   |         | पत्रसङ्ख्या |
|---|---------------------|---------|-------------|
| नैवेद्यादीना तोये प्रक्षेपविधानम्                     |                     |         | १९३         |
| निर्माष्टर्ग्युपलेपनादि                               | •••                 |         | 848         |
| मन्त्रसन्तर्पणक्रमस्य पात्र एवोपदेश्यता               |                     |         | १५४         |
| पटलः (१   | ( â )               |         |             |
| दीक्षाविधिः   | 3 3 15              |         | 198-168     |
| आढ्यानाट्यभेदेन दीक्षाविधौ भेदः                       |                     |         | 198         |
| उपसन्नस्यावस्य दाक्षियितन्यता                         |                     | ***     | 899         |
| स्थूलस्दमपरात्मनाऽवस्थितेषु तस्वेष्वच्युतस्य त्रेध    | ••••<br>र स्माप्ति• |         |             |
| स्थ्रहस्क्षमपरात्मना मन्त्रराशेख्नैविध्यम्            |                     |         | 899         |
| स्थूलाचेकैकमन्त्रराशौ स्थूलसृक्ष्मपरात्मना त्रैविध्यः |                     | ••••    | १९९         |
| 그것  |                     | •••     | १९६         |
| मन्त्रसङ्घस्य तत्त्वसङ्घे सक्षेपमध्यमविस्तारात्मकदी   | क्षात्रावध्यानुगुण  |         | *******     |
| त्रेवाऽत्रस्थाननिरूपणम्                               | ••••                | ••••    | १९६         |
| अधिभूतगणाधिदैवगणाध्यात्मगणविभागः                      | •••                 | ••••    | १५७         |
| तस्त्रशोधने त्रयक्षरस्य विनियोगभेदः                   | ••••                |         | १९८         |
| ईश्वरतत्त्रसशोधने सप्तार्णस्य विनियोगः                |                     | •••     | १९८         |
| शिष्यळक्षणपरीक्षणपूर्वकं शिष्याणा दीक्षितव्यता        |                     | ••••    | १९८         |
| सामान्यदीक्षायाः सिक्षिप्तादिमेदेन त्रैविध्यम्        |                     | ••••    | 196         |
| सक्षिप्तादित्रयस्य फलमेदः                             | •••                 | • • • • | १५९         |
| विशेषदीक्षायाः पञ्चविधत्वम्                           | •••                 |         | 199         |
| सामान्यदाक्षासु शुद्धवर्थस्तस्त्रे मन्त्रसयोजनप्रकारः | ·                   |         | 199         |
| विशेषदीक्षामु तत्त्वेपु मन्त्राणा योजनप्रकारः         |                     |         | १६०         |
| दीक्षासु प्रशस्तास्तिथयः                              |                     | v       | १६१         |
| यागशालाप्रवेशः  |                     |         | १६१.        |
| गदास्थापनम्   |                     |         | 8 8 8       |
| पञ्चगन्येन सर्वद्रन्यप्रोक्षणम्                       |                     |         | १६१         |
| कलश्वविधिः  |                     |         | १६२         |
| स्थिण्डिळेऽग्नौ च हरेर्यजनविधानम्                     |                     |         | १६२         |
| चरुसाधनप्रकारः  |                     | •       |             |
| सिद्धस्य चरोर्विनियोगविधानम्                          |                     |         | १ <b>६२</b> |
| शिष्याणां प्रोक्षणादिविधानम्                          |                     |         | १६२         |
| Programme and and added                               | ••••                | • • •   | १६२         |

## [ १९ ]

| विषया:   | -                 |        | पत्रसह्चचा |
|--|-------------------|--------|------------|
| शिष्ये गुरुणा कर्तव्यस्य सकलनिष्कलमन्त्राणा          |                   |        | १६४        |
| स्वस्य शिष्यस्य चैकात्मतया भावनासमर्थस्यैव गुरो      | : ससारविमोचक      | ता     | 188        |
| मन्त्रमूर्तेर्भगवतः पुरतो विज्ञापनम्                 | *0.22             |        | १६४        |
| शिष्यस्य नामकरणविधानम्                               | ****              |        | १६8        |
| मायास्त्रविधानम्                                     | • • •             |        | 389        |
| भोगमोक्षार्थिनः शिष्यस्य तदन्तरायोन्मूलनार्थं रि     | ाष्यशरीरतया भा    | विते   |            |
| सूत्रे तत्त्रसृष्टिकमेण शिखाप्रमृतिचरण               | ान्तावयवभावनाः    | ्रवेक  |            |
| होमस्य कर्तव्यताविधानम्                              |                   |        | १६९        |
| सूत्र कुण्डसमीप नीत्वा तस्मिन् सूत्रात्मके देहे तत्त | यानां सक्षेपविस्त | राभ्या |            |
| पूर्वोक्तैकद्वित्र्यादिग्रयनप्रकारविकल्पानुगु०       | ग स्मरणप्रकारः    |        | १६६-१६७    |
| तत्त्वहोमः   | ****              |        | १६७-१६८    |
| सपातहोम:   | •••               | ****   | १६९        |
| रजोघटिकाकर्तर्याद्युपकरणद्रव्याणा सस्कारः            |                   |        | १६९        |
| बिलहरणम्   |                   |        | १६९        |
| परिखालेखनम्  | ••••              | **     | १६९        |
| पञ्चगव्यप्रदानम्                                     |                   |        | १६९        |
| चरुशेषमक्षणविधिः                                     |                   |        | १७०        |
| दन्तकाष्ठचर्वणप्रक्षेपणादि                           |                   |        | १७०        |
| अधिकारिमेदेन दन्तकाष्ठपरिमाणमेदः                     | ••••              | ****   | 900        |
| गुभा गुभपरिज्ञानम्                                   |                   |        | १७०        |
| अञ्चभशान्यर्थो होमः                                  |                   |        | 900        |
| शयनविधि:   | ****              | ****   | १७०        |
| स्वप्राधिपतिमन्त्रः                                  |                   |        | १७१        |
| अर्धरात्रे शयनादुत्थाय गुरुणा कर्तन्यो विशेषः        |                   |        | १७१        |
| शुभाशुभस्वप्नभेदानिरूपणम्                            | ••••              | ••••   | १७१        |
| अञ्चभस्वप्रदोषपरिहाराय होमविधानम्                    |                   |        | १७२        |
| न्यूनातिरिक्तप्रायश्चित्तार्थ होमविधानम्             |                   | ****   | १७२        |
| मण्डलपूजनादिकर्तव्यताविधानम्                         |                   | ••••   | १७२        |
| आबद्धनेत्राणा शिष्याणा हस्ततः पुष्पाङ्गालेप्रक्षेप   | गम्               | ••••   | १७२        |
| उद्घाटितनेत्रैः शिष्यैर्गुरुनमस्कारादेः कर्तव्यता    |                   |        | १७२        |

## [ १६ ]

| L . \   | _                       |      |             |
|---|-------------------------|------|-------------|
| विषया:  |                         |      | पत्रसङ्ख्या |
| मन्त्रतृतिहोमः                                      |                         | **** | १७२         |
| मन्त्राधिकारहोमः                                    | •••                     |      | १७२         |
| मलशोधनहोमः  |                         |      | १७३         |
| नवतत्त्वशोधनेन सर्वतत्त्वानां शुद्धता               |                         |      | १७३         |
| वहाँ माविते मन्त्रमयमूर्तिस्वरूपे तत्त्वानामुपसह    | रगप्रकार                |      | 808         |
| निरीक्षणप्रोक्षणादिलक्षणः शिष्यशरीरसस्कारः          | ••••                    |      | 808         |
| तत्त्वाना सृष्टिभावनम्                              | •••                     | •••  | १७४         |
| अनुज्ञाग्रहणपूर्वेक पाशसूत्रस्य कुण्डसमीपे नयन      | म्                      | •••  | 808         |
| मूलमन्त्रेण होमः                                    | ••                      | •••  | 8 0 8       |
| तांडनलक्षण शिष्यशरीरशुद्धीकरणम्                     |                         |      | १७9         |
| तत्त्वाना शोधनप्रकारः                               |                         |      | 909         |
| मोगार्थपूर्णाहुतिप्रकारनिरूपणम्                     |                         | •••• | 800         |
| मोक्षार्थपूर्णाहुतिप्रकारनिरूपणम्                   |                         |      | १७७         |
| ब्रह्मसमापत्तिहोमप्रकारः                            | ****                    |      | 101         |
| सृष्टिक्रमेण सपादिताना तत्त्वाना शिष्यदेहे योज      | ननम्                    |      | १७८         |
| वह्निमध्यस्थस्य भगवतो मन्त्रमूर्तेरर्चनम्           |                         |      | १७८         |
| समयोपदेश.   | ••••                    |      | १७९-१८0     |
| विष्णुहस्तप्रदानपूर्वेक शिष्यस्य मन्त्रहृद्यागासुपर | देशः                    |      | 1 < 1       |
| कुम्मस्थदेवार्चनम्                                  |                         |      | 8<8         |
| गुरो: पूजनम्  |                         |      | 4 < 8       |
| दीक्षान्ते वैष्णवाना भोजनादिना सन्तर्पणस्य व        | र्क्त <del>व्य</del> ता |      | १८२         |
| रात्र्यतिवाहने विशेषनियमः                           |                         |      | १८२         |
| त्रिस्थानस्थितस्य भगवतो विसर्जनं विष्वक्सेनः        | ्जन च                   |      | १८२         |
| अवभृथ—सोमपानप्रकारनिरूपणम्                          | ****                    | **** | १८२-१८६     |
| गुरुयागः  |                         |      | 8<8         |
| गुरुशिष्ययोदींक्षाविधानफलम्                         |                         |      | 8 < 8       |
| पटलः (  | (0)                     |      |             |
| त्रिष्यभेदनिरूपण <b>म्</b>                          |                         |      | 1/8-8/4     |
| समयज्ञलक्षणम्                                       |                         |      | 8 < 8       |
| पुत्रकलक्षणम्                                       | ••••                    |      | 8 < 9       |
|   |                         |      |             |

#### [09]

| [ (9  | J                      |            |             |
|---|------------------------|------------|-------------|
| विषया   |                        |            | पत्रसङ्ख्या |
| साधकलक्षणम्   |                        |            | १८9-१८७     |
| आचार्यल्थणम्  |                        |            | १८७-१८८     |
| पटलः (  | (2)                    |            |             |
| अभिषेकविधिः   | ****                   | ,          | १८८-१९9     |
| अमिषेकेऽधिकारः  |                        |            | 366         |
| अभिषेक्तुराचार्यस्य ब्राह्मणजातीयस्य सर्वेषामभि   | षेकाविधाने <b>ऽ</b> धि | वेकारः     | १८९         |
| ब्राह्मणाद्यभावे स्वस्वावरवर्णानामभिपेकविधाने क्ष   | त्रियादीनामधि          | कारः       | १८९         |
| उत्तमवर्णस्याविदुष उपायेन संबोधप्रापणम्   |                        |            | १८९         |
| प्राप्तसबोधस्य तस्य विनाऽनुग्रहबुद्ध्या सकलि  | याधानपूर्वक            | कालेन      | 20 30 00    |
| <b>कृतकु</b> त्यतापाद्नम्   |                        |            | १८९         |
| सजातीयस्यापि गुरोरलाभे स्वस्य स्वेनैवाभिषेकस  | य कर्तव्यता            |            | 169         |
| सित गुरौ स्वेनैव कर्तव्यतायाः प्रतिषेधः   |                        | ****       | 190         |
| उत्तमवर्णस्य दीक्षाविधानेऽवरवर्णस्यानधिकारः   |                        |            | 190         |
| समयज्ञाभिपेकविधानप्रकारः  | ••••                   |            | 380         |
| पुत्रकस्याभिषेकविधानप्रकारः   |                        |            | 190         |
| साधकामिषेकप्रकारः   |                        |            | १९०         |
| भाचार्याभिषेचनम्  |                        |            | 199         |
| समयज्ञादीना चतुर्णामिभषेके भावनीयः पर्वभेदः   |                        |            | 199         |
| आचार्यामिषेकप्रयोगः   |                        |            | 199-199     |
| आचार्यपदासाधारणा विशेषसमयाः   |                        |            | १९8         |
| आचार्यपादोदकप्राशनस्य कर्तव्यता   |                        |            | 199         |
| पुत्रकस्याभिपेके देयविशेषः  |                        |            | 199         |
| समयज्ञस्याभिषेके देयविशेषः  |                        |            | 189         |
| अभिषेकस्य श्रेयःप्रभृत्यनेकफल्लाधनता  |                        | ••••       | १९९         |
| पटलः ( १  | (9)                    |            |             |
| अभिषिक्तस्य मन्त्राराधनविधानम्  |                        |            | १९६         |
| मन्त्रसिद्धौ वत्सरत्रय याबद्विन्नप्राप्तिः  | ET                     |            | १९६         |
| विन्नैरनुपहतस्य चतुर्थादिवत्सरे बहुशिष्योपसेव्यत  | ।दिलक्षणश्रभ           |            | १९७         |
| सप्तमादारभ्य राजोपसेन्यता   |                        | (388.87.6) | १९७         |
| AND REPORT OF THE PROPERTY OF | 77.7                   |            | 1,70        |

#### [ १८]

| [ ((   | ]     |      |             |
|--|-------|------|-------------|
| विषया:                                       |       |      | पत्रसङ्ख्या |
| दशमादारभ्य नानाश्चर्यदर्शनम्                 | ••••  |      | १९७         |
| मन्त्रसिद्धेरप्रकाश्यता                      |       | •••  | १९८         |
| पटलः ( २                                     | (0)   |      |             |
| यतिष्ठाविधिः                                 |       | •••• | 18<-938     |
| पटे विंबविधानम्                              |       |      | १९९         |
| पटमानादि                                     | ••••  |      | १९९         |
| पटस्य चित्रकारस्य च सस्कारः                  |       |      | १९९         |
| गृहार्चोमानम्                                |       |      | १९९         |
| गृहादन्यत्र मानाधिक्यम्                      | • • • |      | १९९         |
| गृहाचीसु लेख्यविवस्य हस्ताधिकमानत्वेऽप्यदोषत | ١     |      | १९९         |
| बिबस्यावयवमानविधानम्                         |       |      | १९९-२०३     |
| बिम्बद्रव्यविधानम                            |       |      | २०३         |
| सिद्धचभिकाक्षिणा गृहे शैलजादिप्रतिषेधः       |       |      | २०३         |
| पीठमानम्                                     |       |      | 908         |
| पीठे द्वैविध्यम्                             |       |      | २०४         |
| चतुरस्रपीठलक्षणम्                            |       |      | २०४         |
| चतुरस्रायतपीठलक्षणम्                         | ••••  |      | 908         |
| चळाचीयाः पीठमानम्                            |       | •••• | 208         |
| उपपीठलक्षणम्                                 | ••••  |      | 208         |
| बिम्बपीठयोः सजातीयविजातीयद्रव्यविकल्पः       |       |      | 709         |
| प्रासादपीठमानम्                              | ••••  |      | २०५         |
| प्रासादपीठलक्षणम्                            |       | **** | २०६         |
| प्रासादे भेदाः                               | ••••  |      | २०६         |
| प्रासादपीठरचनाविधानम्                        | ••••  |      | २०६         |
| प्रासादजङ्का                                 | ••••  |      | २०६         |
| जह्वोर्घ्यरचना                               |       |      | २०६         |
| भूमिकापञ्चकविधानम्                           | ***   |      | २०६         |
| अमलसारकविधानम्                               | ••••  |      | 700         |
| चक्रविधानम्                                  | •••   |      | 301         |
| प्रासादद्वारविधानम्                          | ****  |      | 201         |
|  |       |      |             |

## [ १९ ]

| विषयाः                                   | -    |      | पत्रसङ्ख्या |
|--|------|------|-------------|
| द्वाराग्रे मण्डपविधानम्                  | •••• |      | 305         |
| प्रतिष्ठाकालः                            | •••  | ***  | 306         |
| आधिवासमण्डपाविधानम्                      |      | **** | २०९         |
| मण्डपमध्ये वेदिपञ्चककल्पना               |      |      | 908         |
| पञ्चानां वेदीना विनियोगभेदः              |      | •••  | 306         |
| प्रतिष्ठाविधानोपक्रमः                    |      |      | 306         |
| शिल्पिदोषविनाशार्थस्नपनविधानम्           |      | **** | 280         |
| अधिवासस्नपनार्थकलशस्थापनाविधानम्         |      |      | 7 9 9       |
| नेत्रोन्मीलनाविधानम्                     |      |      | 288         |
| नेत्रोन्मीलनाङ्गभूतलघुस्नपनम्            |      |      | 288         |
| अधिवासस्त्रपनिवधानम्                     |      |      | 7 ? ?       |
| स्नपनकलरोषु पूरणीयद्रव्याणि              |      |      | 717         |
| विम्बे मन्त्रन्यासविधानम्                |      | •••• | 717         |
| सक्लीकरणादिविधानम्                       |      |      | 717         |
| कार्णिकास्थितैः कलशैः स्नपनम्            |      |      | 717         |
| अर्ध्यसमप्णप्रमृतिविज्ञापनान्तमभ्यर्चनम  |      |      | २१३         |
| बिम्बसहिते पीठे समस्ताध्वमयत्वभावनम      | Ţ    |      | २१३         |
| पीठे आधारशत्त्रयादिध्यानम्               |      |      | २१३         |
| पीठस्याच्छादनम्                          | **** |      | २१३         |
| नीराजनम्                                 | **** | •••• | २१३         |
| रथयात्राविधानम्                          |      |      | २१३         |
| शयनाधिवासनम्                             |      |      | २१३         |
| स्नपननेत्रोन्मीलनादिक्रियाङ्ग मृतहोमविधा | नम्  |      | 318         |
| शान्युदकेन विम्बशिरसि प्रोक्षणम्         | **** |      | 3 8 8       |
| कर्ममन्त्राणां जपो बलिदान च              | •••• |      | २१४         |
| चतुर्दिक्षु होमः                         | **** |      | २१४         |
| ध्यानाधिवासनम्                           | •••  |      | 289         |
| ईश्वरसन्धानम्                            | ***  | ۶    | 319-01      |
| शब्दानुसन्धानम्                          | •••  |      | २१६         |
| मन्त्रसन्धानम्                           | **** | **** | 216         |
|  |      |      |             |

#### [ २० ]

| विगया                                |                      |                            |               |           |
|--------------------------------------|----------------------|----------------------------|---------------|-----------|
| मन्त्रन्यासपूर्वकमभ्यर्चनम्          |                      |                            |               | पत्रसह्या |
|                                      | ~ ~ ~                |                            |               | 386       |
| वूर्वादिपु चतुर्पु दिक्षु पश्चिमाद   | ॥भमुखमवास्थ्<br>२००० | ग्तः ब्राह्मणः ऋमा<br>२००२ | हिगादिपठनम् २ | १८-२१९    |
| आप्ताद्यनुयायिभिः सह ईशार्वि         | द्विदक्षु स्थि       | तयत्यादिभिरेकाय            | नीयशाखा-      |           |
| मन्त्राणा पठनीयता                    |                      | ••••                       |               | २१९       |
| प्रागादिषु चतुर्षु दिक्षु गुर्वाद    | ाना स्थितिः          | ••••                       |               | 388       |
| स्तोत्रपाठकाना बहिः स्थितिः          |                      | 0000                       |               | २१९       |
| तत्त्वसशोधनादि                       |                      |                            | ****          | २२०       |
| शान्युदकप्रोक्षणम्                   | ****                 | •••                        |               | 220       |
| सान्निध्यप्रार्थनम्                  | ••                   |                            |               | 240       |
| उत्थापनसमुखीकरणादि                   |                      |                            | •••           | 290       |
| लयभोगविधानेन यजनस्य कर               | तेव्यता              |                            | 20.20         | २२०       |
| विहस्थस्य पूजनम्                     |                      |                            |               | २२०       |
| शान्तिहोमविधानम्                     |                      |                            | ****          | 990       |
| लग्नकालप्रतीक्षायां कालापनोद         | नऋमः                 |                            |               | २२०       |
| ब्रह्मशिलास्थापनविधानम्              | ****                 |                            | 77            | १-६२२     |
| रत्नादिन्यासः                        |                      |                            | **            | 222       |
| ब्रह्मशिछोपरि पीठन्यासविधिः          |                      |                            |               | 223       |
| भगवतः प्रबोधनम्                      |                      |                            |               | 773       |
| देवस्य प्रासादे प्रवेशनम्            | ****                 |                            |               | 228       |
| पीठे देवस्य स्थापनम्                 |                      |                            |               | 228       |
| विज्ञापनम्                           | ••••                 |                            |               | 228       |
| तत्त्वसंस्थापनम्                     |                      |                            |               | 2 7 8     |
| विम्बस्य मन्त्रमयवृक्षत्वेन भाव      | नम्                  |                            |               | 229       |
| प्रतिष्ठानन्तर स्नपनस्य चतुःस्थ      | ानार्चनस्य च         | कर्तब्यता                  | ****          | 229       |
| सुप्रतिष्ठितताभिशसनम्                |                      |                            |               | 229       |
| स्तुतिजयोद्घोषः                      |                      |                            |               | २२९       |
| बिछदानम्                             |                      | •••                        |               | २२६       |
| न्यूनाधिकशान्त्यर्थपूर्णोहुतिः       |                      |                            |               | २२६       |
| फल्र्युतिः                           | ****                 |                            |               | २२६       |
| प्रतिष्ठाकर्मणि प्रवृत्ताना पूजनम    | Ę                    |                            | 1000 PM       | २२६       |
| androanes the same at the section of | -                    | #. #. #. #. //             |               | , , ,     |

#### [ ११ ]

|                                    | ١, ١         | , 1            |        |             |
|------------------------------------|--------------|----------------|--------|-------------|
| विषया.                             |              |                |        | पत्रसङ्ख्या |
| रात्रौ जागरणस्य कर्तव्यता          | ****         | ****           | ****   | २२६         |
| प्रतिष्ठादिनादारभ्य दिनचतुष्टय     | यावद्धोमस्य  | कर्नव्यता      |        | २२६         |
| प्रतिष्ठादिनाचतुर्थे दिने स्नपनि   | वेधानम्      |                |        | २२७         |
| विष्वक्सेनपूजनम्                   |              | ••••           | ****   | 240         |
| शिष्टद्रव्यविनियोगप्रकारः          |              |                | ****   | २२७         |
| अवभृथ:                             |              | ****           | ****   | २२७         |
| चित्रप्रतिष्ठाया विशेषः            | ••••         |                |        | 770         |
| तत्र रत्नन्यासप्रतिषेधः            |              | ****           | Lac    | २२७         |
| धातुजादिषु तद्विधानम्              | •••          |                | ••••   | २२७         |
| जीर्णविम्बस्याभ्यर्चनप्रतिपेधः     | ••••         |                | ***    | २२७         |
| धातुद्रक्योद्भवादन्यस्य भग्नविम्बर |              |                | ****   | 791         |
| पीठबिम्बयोर्भङ्गे क्षते वा कर्तव्य | पस्य निरूपण  | ाम्            | •••    | 791         |
| अविज्ञाते बीजन्यासे प्रणवेन वि     |              | •••            |        | 27/         |
| देशभङ्गाद्यपद्रवेऽवधानेन सरक्ष्य   | ाता          | ••             | ••••   | 779         |
| महोत्सवस्य कर्तव्यताविधानम्        |              |                |        | 779         |
|                                    | पटलः         | (२१).          |        |             |
| पवित्रविधिः                        |              | ••••           | . ₹₹   | (9-280      |
| पवित्रारोपणकालविधानम्              |              | ••••           |        | २३०         |
| सूत्रादीनामधिवासकालः               |              | ****           | ****   | २३०         |
| सूत्राणा कौशेयत्वादिविकल्पः        |              |                |        | २३०         |
| पवित्रनिर्माणप्रकारः               | •••          | ••••           | *      | २३०         |
| मण्डले प्रतिमन्त्रं समर्पणीयपवि    | त्रसङ्ख्या   |                | ****   | 230         |
| पवित्राणा व्यासमानदैर्घ्यादि       | ••••         | ****           | -**    | 738         |
| पवित्रग्रन्थीना रञ्जनादिविधानम्    | ****         | ••••           |        | 737         |
| विम्बरय शिरःप्रमृत्यवयवमानभेदे     | न पवित्राणाः | गकुतिभेदमानभेद | (विधि: | २३१         |
| पीठपवित्रप्रमाणविधिः               |              |                |        | २३१         |
| प्रातिसराणा व्यासनियमः             | ••••         |                | ****   | २३१         |
| -                                  |              | •••            | ****   | २३१         |
| गुर्वादीना पवित्रविधानप्रकारभेद    | :            |                | ••••   | २३२         |

## [ ११ ]

|                                     | L \\ .                   | l                 |      |             |
|-------------------------------------|--------------------------|-------------------|------|-------------|
| विषयाः                              |                          |                   |      | पत्रसङ्ख्या |
| पवित्राधिवास:                       | ••••                     | •••               | •••• | 737-738     |
| नित्यार्चनपूर्वकचतुःस्थानार्चनम्    | ••••                     | ••••              |      | २३४         |
| कल्शस्थस्य पवित्रसमारोपणप्रक        | तर:                      |                   | •••• | 738         |
| मण्डलस्थस्य पवित्रारोपणप्रकारः      |                          |                   |      | २३५         |
| अग्निस्थिबम्बस्थयोः क्रमात्पवित्रार | रोपणम्                   |                   |      | २३५         |
| अग्निस्थस्य समर्पणे विशेषः          |                          |                   |      | २३९         |
| महामन्त्रजपस्य कर्तव्यता            |                          |                   |      | 739         |
| विज्ञापनम्                          |                          |                   |      | २३५         |
| गुरुपूजनम्                          | ••••                     |                   |      | २३६         |
| पवित्रोत्सवान्ते यत्यादिभ्यः कृतर   | स्य दा <b>नस्य</b> फलारि | वेक्यम्           |      | २३६         |
| वैष्णवमात्रस्य पूज्यता              |                          |                   |      | २३७         |
| वैष्णवालिङ्गधारिमात्रस्य पूज्यता    | ••••                     |                   |      | २३७         |
| आरोपिताना पवित्राणां यावदपन         | यनकाल तथैव मप            | म्डलादौ स्थाप्यता |      | २३८         |
| पवित्रविसर्जनप्रकारः                | ****                     |                   |      | 736         |
| पवित्रशब्दिनिर्वचनम्                |                          |                   |      | 736         |
| पवित्रकर्मविधानानन्तर पालनीय        | ाः विशेषनियमा            | ****              |      | २३९         |
| पवित्रमहामन्त्रः                    |                          |                   |      | 739-780     |
| पवित्रमहामन्त्रप्रशंसा              |                          | ••••              |      | 989         |
|                                     | m=== / 3                 | <b>5</b> /        |      |             |
|                                     | पटलः ( २                 | ( 7 )             |      |             |
| वैष्णवाचारलक्षणम्                   |                          |                   | ***  | 780-798     |
| भागवतधर्मैकनिष्ठानां साम्येऽपि      | वैषम्ये कारणम्           | ****              | •••  | 780         |
| यतीना लक्षणम्                       |                          | ••••              | •••• | 585         |
| एकान्तिना लक्षणम्                   | ***                      | ••••              | •••• | 386         |
| वैखानसानां लक्षणम्                  |                          | ••••              |      | 286         |
| कर्मसाखतस्य लक्षणम्                 |                          |                   |      | 286         |
| शिखिनो छक्षणम्                      | ••••                     | ••••              | •••  | 286         |
| वैखानसादिभ्यो वैष्णवेभ्यो भग        |                          | तेप्रदानां फलविशे | पः   | २४९         |
| गृहस्थेभ्यो वैष्णवेभ्यो प्रामादिद   |                          |                   |      | २४९         |
| ब्राह्मणादन्यतो वृत्तिप्रहणप्रातिषे | व:                       |                   | •••• | २४९         |
|                                     |                          |                   |      |             |

#### [ २३ ]

| विषया.                              |                |      |      | पत्रसङ्ख्या |
|-------------------------------------|----------------|------|------|-------------|
| आप्तलक्षणम्                         |                | •••• |      | 788-790     |
| अनाप्तलक्षणम्                       |                | **** |      | 290         |
| आरम्भिलक्षणम्                       |                |      |      | २५०         |
| अञ्जलिकारिलक्षणम्                   |                | •••• |      | २५०         |
| सप्रवर्तिलक्षणम्                    |                |      |      | 790         |
| योगिलक्षणम्                         |                |      |      | 290         |
| जपनिष्ठाना लक्षणम्                  | ••••           |      |      | २५१         |
| तापसलक्षणम्                         |                |      |      | 268         |
| शास्त्रज्ञलक्षणम्                   |                |      |      | २५१         |
| शास्त्रधारकलक्षणम्                  |                |      |      | २५२         |
| उक्तलक्षणलक्षितानां यागपूजाईत       | वम्            |      |      | २५२         |
| पश्चकालमेदः                         |                |      |      | २५३         |
| पञ्चकालकर्तव्यकमभेदः                |                |      |      | २५३         |
|                                     | पटलः ( र       | २३ ) |      |             |
| श्राद्धविधिः                        |                | •••• |      | २५४-२६६     |
| दीक्षितैरपि श्राद्धस्यावस्य कर्तव्य | ता             | **** | ٠    | 298         |
| धर्मेषु श्राद्धस्य श्रेष्ठयम्       |                |      |      | २ ९ ४       |
| श्राद्वानिमित्तभूतकालादिविशेषः      |                | •••• |      | 299         |
| श्राद्धविधानप्रकारः                 | ••••           |      |      | 299         |
| आमन्त्रिताना वैष्णवानामासनप         | रिकल्पनप्रकारः |      | •••• | २९९         |
| गुरुवर्गे पितृवर्गे मातृवर्गे च स   | थापनप्रकारः    | **** | ,,   | २९९         |
| पित्रादौ जीवति पितामहादीना          | नियोज्यता      |      |      | २९६         |
| वैष्णवानामलामे सङ्कोचविधिः          |                |      |      | २५६         |
| पित्रादिस्थाने वृताना देहन्यासरि    | ब्रेधिः        |      |      | २५६         |
| तेषा ध्यानप्रकारः                   |                |      |      | २५६         |
| पितॄणा पाद्यार्ध्यदानप्रकारः        |                |      |      | 398         |
| अर्ब्यसस्रावस्य पितृपात्रेण ग्रहप   | गम्            |      |      | २९६         |
| पितॄणा विष्णुरूपाणा ध्यानप्रव       |                |      |      | २९६         |
| मन्त्रेशसन्निधावस्यर्थनम्           |                | •••• |      | 290         |
| चरुसाधनप्रकारः                      |                |      | •••• | 790         |
|                                     |                |      |      |             |

| [ 48   | )       |          | पत्रसह्य     |
|--|---------|----------|--------------|
| विपया<br>साधितेन भक्ष्यभोज्यादिना देवस्य यजनम्     |         |          | 250          |
| पितृसन्तर्पणमन्त्रः                                |         | •••      | 396          |
| पितृस्यः पिण्डदानविधानम्                           | ****    |          | 396          |
|  | ****    |          |              |
| पितॄणामन्नसविभजनप्रकारः                            | • • • • |          | ₹ <b>९</b> ८ |
| भुजानेपु पितृषु जपध्यानविधिः                       |         |          | २९९          |
| भोजनान्ते दक्षिणादानम्                             | ••••    | ***      | २५९          |
| शेपानसविभजनम्                                      |         | ••••     | 799          |
| प्रेतश्राद्धविधाने प्रथमेऽहानि कर्तव्यविधिः        | *       | ٠ ٦      | ५९-२६१       |
| दितीयदिनादारभ्य याबद्शमदिन कर्तव्यिविधिः           |         |          | २६१          |
| एकादशेऽहनि कर्तव्यश्राद्धविधिः                     |         | ٠ ٦      | ६१-२६२       |
| प्रेतत्वनिवर्तकमाव्दिकश्राद्धम्                    |         | ٠٠٠ ٩    | ६३-२६५       |
| पैतामहान्नरोपस्य जायायै प्रदानम्                   |         |          | २६५          |
| शेषानसविभजनम्                                      |         |          | २६५          |
| पितृणा विसर्जनप्रकारः                              |         |          | २६९          |
| नेत्रावमार्जनम्                                    |         |          | २६९          |
| गुर्वादिश्राद्धस्य समयज्ञादिभिः कर्तव्यता          |         |          | २६६          |
| श्राद्वानुष्ठानप्रशसा                              | •••     |          | २६६          |
| पटलः (   | २४ )    |          |              |
| <b>मेतसंस्कारः</b>                                 |         | २        | ६६–२७५       |
| शवस्य स्नपनादि                                     |         | 33361 13 | २६७          |
| शवस्य संस्कारस्थाननयनम्                            |         | 0.7507   | २६७          |
| संस्कारस्थानसमीकरणम्                               |         |          | २६७          |
| तदीयभैक्षपात्राद्युपकरणाना तच्छवेन सह नयन          | ····    | ****     | २६७          |
| तत्र वर्ज्यद्रव्याणि                               | ****    | 4272     | २६७          |
| प्रेतसंस्कारोपकरणद्रव्याणामप्रतो नयनम्             |         | •••      | २६७          |
| गुरुणाऽऽप्ययक्रमेण स्वाङ्गे मन्त्रन्यासस्य कर्तव्य |         | **1,     | २६८          |
| मृतेनानुष्ठितेन मन्त्रेण पूजनस्य कर्तव्यता         |         |          | 786          |
| तदपरिज्ञाने नार्रासंहेण मन्त्रेण पूजनस्य कर्तव्य   | iai     | •••      |              |
|  | 1(1)    | •••      | <b>२६८</b>   |
| कुम्भस्थापनतत्पूजनविधिः                            | ***     | ****     | २६८          |

| £   | 18             |      | (Terror en         |  |  |  |
|---|----------------|------|--------------------|--|--|--|
| विषया<br>स्थण्डिले पूजनविधानम्                |                |      | पत्रसङ्ख्या<br>२०० |  |  |  |
|   |                | •••• | २६९                |  |  |  |
| कुण्डे हवनविधानम्                             | ••••           | •••• | २६९                |  |  |  |
| शवस्य प्रोक्षणादिसस्कारः                      |                | •••• | 700                |  |  |  |
| आह्वानपूर्वक जीवस्य शवशरीरे योजनम्            |                | •••• | 200                |  |  |  |
| जीवाह्वानमन्त्रः                              | ••••           | •••• | 700                |  |  |  |
| तस्य जीवस्य परे तत्त्वे सयोजनप्रकारः          | •••            |      | 300                |  |  |  |
| चिताकल्पनप्रकारः                              | ••••           | **** | 900                |  |  |  |
| सर्वस्य पूजाद्रव्यस्य कुण्डे होमः             | ••••           | •••• | २७१                |  |  |  |
| शवस्य चितायामारोपणम्                          | ••••           | •••• | २७१                |  |  |  |
| योगपद्वादीना शवस्य कण्ठादिस्थानविशेषे स्थ     | गपनम्          | ••   | २७१                |  |  |  |
| चिताप्रक्वालनं पूर्णाहुतिश्च                  |                | ••   | २७१                |  |  |  |
| चिताभ्रमणपूर्वकमस्त्रकछशस्य वियति प्रक्षेपण   | गविधिः         | •••  | १७१                |  |  |  |
| स्तानविधिः                                    | ••••           | **** | २७२                |  |  |  |
| गुर्वादिभिः कर्तन्यजपविधिः                    | ••••           |      | 707                |  |  |  |
| नक्तं भगवतो यजनस्य कर्तव्यता                  |                |      | 707                |  |  |  |
| अस्थिसञ्जयनम्                                 |                | **** | २७२                |  |  |  |
| शवसंस्कारस्यावश्यकर्तव्यता                    | ••••           | **** | 707                |  |  |  |
| यतिधर्माश्रयाणा प्रेतसंस्कारे विशेषः          |                |      | २७३                |  |  |  |
| परोक्षमृताना सस्कारप्रकारः                    |                | २७   | 3-709              |  |  |  |
| पटलः ( २५ )                                   |                |      |                    |  |  |  |
| <b>प्रायश्चित्ताविधिः</b>                     |                | २७   | 9-9/               |  |  |  |
| सन्ध्याछोपे प्रायश्चित्तम्                    |                |      | 209                |  |  |  |
| प्रमादादशुचिससृष्टान्नमक्षणे अन्यस्त्रीगमने च | प्रायश्चित्तम् |      | २७६                |  |  |  |
| तत्र क्षत्रियादींना विशेष:                    |                |      | २७६                |  |  |  |
| प्रायश्चित्ताङ्गभूतपञ्चगव्यविधानम्            | ••••           | •••• | २७६                |  |  |  |
| कामतो ब्राह्मणवधे प्रायश्चित्तम्              |                |      | २७७                |  |  |  |
| सुरापानप्रायश्चित्तम्                         |                | •••• | 200                |  |  |  |
| लर्णसोयादौ प्रायश्वित्तम्                     |                |      | 200                |  |  |  |
| गुरुपत्नीगमने प्रायश्चित्तम्                  | ••••           |      | २७७                |  |  |  |
|   |                |      |                    |  |  |  |

## [ २१ ]

| विषयाः  |      |      | पत्रसङ्ख्या |
|---|------|------|-------------|
| रजस्वलास्पृष्टान्नभक्षणे प्रायश्चित्तम्             |      |      | 900         |
| छिङ्गमूर्तये विनिवेदितान्नस्य भक्षणे प्रायश्चित्तम् |      |      | २७८         |
| आशौचान्नमक्षणे प्रायश्चित्तम्                       |      |      | 306         |
| पतिताद्यन्नभक्षणे प्रायश्चित्तम्                    |      |      | २७८         |
| सीमन्तादिसस्कारान्नमक्षणे प्रायश्चित्तम्            |      |      | 306         |
| सद्यःश्राद्धान्नभक्षणे प्रायश्चित्तम्               |      |      | २७८         |
| सच्छूदानभक्षणे प्रायश्चित्तम्                       |      |      | 709         |
| आरामादी भोजने प्रायश्चित्तम्                        |      |      | 769         |
| नैष्ठिकाद्यन्नभक्षणे प्रायश्चित्तम्                 |      |      | २७९         |
| मधुमासयोर्दर्शने प्रायश्चित्तम्                     |      | **** | 206         |
| नियमात्प्रच्यवे प्रायश्चित्तम्                      | •••• |      | 909         |
| ज्ञानप्राप्तरन्यत्र नृत्यगीतादिकरणे प्रायश्चित्तम्  | **   | **** | २७९         |
| सूतकादौ पूजास्वीकारे प्रायश्चित्तम्                 |      |      | 210         |
| उचाटनादिकरणे प्रायश्चित्तम्                         |      |      | २८0         |
| चैत्यादिषु देवप्रतिष्ठाकरणे प्रायश्चित्तम्          |      |      | 240         |
| पद्यादिप्रतिप्रहे प्रायश्चित्तम्                    | •••• |      | 960         |
| क्षीरादिप्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम्                   |      |      | 210         |
| रःनादिप्रतिप्रहे प्रायश्चित्तम्                     |      |      | 3<1         |
| गवादिप्रतिप्रहे प्रायश्चित्तम्                      |      |      | 7<9         |
| शाल्यादिप्रतिप्रहे प्रायश्चित्तम्                   |      |      | 2<1         |
| भूदानप्रतिप्रहे प्रायश्वित्तम्                      |      |      | २८१         |
| पापसङ्करे प्रायश्चित्तम्                            |      |      | 7<1         |
| काष्ट्रादिहरणे प्रायश्चित्तम्                       |      |      | 2<8         |
| शास्त्रादिहरणे प्रायश्चित्तम्                       |      |      | 262         |
| गुरुदारादिनिन्दने प्रायश्चित्तम्                    |      |      | 262         |
| प्राणिघाते प्रायश्चि <b>त्तम्</b>                   |      | •••  | 262         |
| श्वशृगालादिदंशे प्रायश्वित्तम्                      |      |      | 9/9         |
| असत्प्रतिप्रहे प्रायश्चित्तम्                       |      |      | 2 < 2       |
| श्वपाकादिस्पर्शे प्रायश्चित्तम्                     |      |      | 262         |
| वैष्णवादिनिन्दादौ प्रायश्चित्तम्                    |      |      | 262         |
|   |      |      |             |

#### [ २७]

| विषया:   |     |      | पत्रसङ्ख्या |  |  |  |
|--|-----|------|-------------|--|--|--|
| अपराकुने प्रायश्चित्तम्  |     |      | २८३         |  |  |  |
| अरिष्टचिन्तनादौ प्रायश्चित्तम्                                   |     |      | २८३         |  |  |  |
| रेतःस्पन्दने प्रायश्चित्तम्                                      | *** |      | २८३         |  |  |  |
| गर्भपाते प्रायश्चित्तम्  |     | •••• | २८३         |  |  |  |
| धेनुवधे प्रायश्चित्तम्   |     |      | २८३         |  |  |  |
| वृक्षच्छेदे प्रायश्चित्तम्                                       |     |      | 7 (3        |  |  |  |
| गुरोः खेदावहवादाद्याचरणे प्रायश्चित्तम्                          |     |      | ₹ < ₹       |  |  |  |
| देवालयादौ मूत्रोत्सर्गादिकरणे प्रायश्चित्तम्                     |     |      | 2<3         |  |  |  |
| वैष्णवारामतः क्रीडार्थे फलपुष्पादिहरणे प्रायश्चित्तम्            |     |      | 2<8         |  |  |  |
| नम्रीभूय स्नाने प्रायश्चित्तम्                                   |     |      | 2<8         |  |  |  |
| वृद्धगुर्वेपचारे प्रायश्चित्तम्                                  |     |      | 2<8         |  |  |  |
| दुष्टेन मनसा गुरुभार्यासुतयोर्दर्शने प्रायश्चित्तम्              |     |      | 2<8         |  |  |  |
| स्त्रीराद्रादिवधे प्रायिश्वत्तम्                                 |     |      | 2 < 8       |  |  |  |
| आलये चण्डालप्रवेशे प्रायश्चित्तम्                                |     |      | 3<8         |  |  |  |
| रजकादीनां गृहे प्रवेशे प्रायश्चित्तम्                            |     |      | 2<8         |  |  |  |
| नियतानुष्ठानस्य विष्णुमयस्य सिद्धस्य सद्यः ग्रुद्धचादिविशेपकथनम् |     |      | 3 < 8       |  |  |  |
| ब्राह्मणादीनां स्तकमृतकयोर्जपाद्यनुष्ठानानर्हता                  |     |      | 7 < 9       |  |  |  |
| उच्छिष्टसङ्करे प्रायश्चित्तम्                                    |     |      | 9 < 9       |  |  |  |
| अदीक्षितावलोकने प्रायश्चित्तम्                                   |     |      | 7 < 9       |  |  |  |
| गुरुदेवनाम्ना शपथाचरणे प्रायश्चित्तम्                            |     |      | २८9         |  |  |  |
| सङ्करे प्रायिश्वत्तम्  |     |      | 269         |  |  |  |
| स्तेयादौ प्रायश्चित्तम्  |     |      | 9 < 9       |  |  |  |
| मन्त्राधारभूतार्चोपघातदोषशान्त्यर्थप्रायश्चित्तम्                |     |      | २८७ -२८८    |  |  |  |
| पटलः ( २६ ).   |     |      |             |  |  |  |
| मृलमन्त्रसाधनम्  |     |      | २८८-१९८     |  |  |  |
| मन्त्रसाधने देशवैलक्षण्यादिनियमः                                 |     |      | २८९         |  |  |  |
| म्लमन्त्रस्य भूतोपशमनादौ विनियोगप्रकारः                          |     |      | २८९         |  |  |  |
| विषप्रशामनप्रकार.  |     |      | २९०         |  |  |  |
| वशीकरणप्रकारः  |     |      | 790         |  |  |  |

[ २८ ]

|   | [ /        | <b>-</b> ]         |      |             |
|---|------------|--------------------|------|-------------|
| विषया:  | 272        |                    |      | पत्रसङ्ख्या |
| उचाटनप्र <b>कारः</b>                                    |            | ****               |      | २९१         |
| विद्वेषणविधानम्   |            |                    |      | 799         |
| भाकर्षणम्   |            |                    |      | 999         |
| मारणम्  |            |                    |      | 399         |
| स्तम्भनम्   |            |                    |      | 797         |
| पुष्टिविधानम्   |            | ••••               |      | 797         |
| शान्तिकविधानम्  |            | ****               |      | 797         |
| तुष्टिविधानम्   |            |                    |      | २९२         |
| वैखरीसिद्धिः  |            |                    |      | 793         |
| खङ्गसाधनम्  |            |                    | •••• | 793         |
| अञ्जनादिसाधनम्  |            |                    |      | २९३         |
| गुलिकासाधनम्  |            |                    |      | 79.3        |
| रसायनादिसाधनम्  |            |                    |      | 798         |
| यक्षिणीसाधनम्   |            |                    |      | 798         |
| परसैनिकप्रणाशनम्  |            |                    |      | 299         |
| दिव्याना स्तम्भनम्                                      |            |                    |      | 799         |
| उत्पातप्रशमनम्  |            |                    |      | २९६         |
| विषशस्त्रादिभयप्रशमनन                                   | -          |                    |      | २९६         |
| चऋयन्त्रसाधनम्  |            |                    |      | 798         |
| राङ्कयन्त्रसाधनम्                                       |            |                    |      | 798         |
| तिथिनक्षत्रविशेषात्पलमे                                 | <b>द</b> : |                    | •••• | 790         |
| आहुतिद्र <b>्यभेदादाहुतिस</b>                           |            |                    | •••• | 790         |
| मन्त्रराजस्य महिमा                                      |            |                    |      |             |
| 3 5 3 3 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5 5                 |            |                    | •••• | २९८         |
| ~   | पटलः (     | २७).               |      |             |
| शक्तिमृन्त्रसाधनम्                                      |            | ••••               | २९   | .९–३१५      |
| लक्ष्म्यादिषु अनन्ताद्यासनस्य द्वारयागादेश्च साधारण्यम् |            |                    | 286  |             |
| लक्ष्म्यादियागादन्यत्र विष्वक्सेनपूजनप्रतिषेधः          |            |                    |      | 799         |
| सिद्धिपरायणैः ऋियमाणे                                   |            | ारिकमन्त्रान्विनैव | गे-  |             |
| पचारस्य कर्तव्य   | ता         |                    |      | 799         |
| जपसूत्रे विशेषः   |            | ••••               |      | २९९         |
|   |            |                    |      |             |

#### [ २९ ]

|                                  | [ / ] ]      |         |             |  |  |
|----------------------------------|--------------|---------|-------------|--|--|
| विषयाः                           |              |         | पत्रसङ्ख्या |  |  |
| घूपघण्टादीनां साधारण्यम्         | ****         |         | २९९         |  |  |
| <b>छक्ष्या अङ्गमन्त्रः</b>       |              |         | ₹ 0 0       |  |  |
| <b>७</b> क्ष्म्याः सखीमन्त्र:    | ****         |         | 300         |  |  |
| <b>लक्ष्म्या</b> अनुचरमन्त्रः    | ****         |         | ३००         |  |  |
| मण्डलम्                          | ****         |         | ३००         |  |  |
| न्यास:                           |              | • • • • | ३००         |  |  |
| लक्ष्म्या <b>मान</b> सयागः       | ****         |         | 308         |  |  |
| बाह्ययागार्थो मण्डले विन्यासः    |              |         | ३०१         |  |  |
| जपहोमादिविधिः                    |              |         | 308         |  |  |
| लक्ष्मीमन्त्रासिद्धिजं सामध्येम् | ****         |         | 307         |  |  |
| कीर्तिमन्त्रसाधनप्रकारः          |              |         | 303-309     |  |  |
| कीर्तिमन्त्रसिद्धिज सामर्थ्यम्   |              |         | 309         |  |  |
| जयामन्त्रसाधनप्रकारः             |              |         | ३०६-३०८     |  |  |
| जयामन्त्रसिद्धिज सामर्थ्यम्      |              |         | 306         |  |  |
| मायामन्त्रसाधनप्रकारः            |              |         | 309-313     |  |  |
| महायोनिमुद्रा                    | •            |         | 288         |  |  |
| अनुचरमुद्रा                      | ***          |         | ३१२         |  |  |
| मायामन्त्रासिद्धिज सामर्थ्यम्    |              |         | ३१३         |  |  |
|                                  | परलः ( २८ ). |         |             |  |  |
| अङ्गमन्त्रसाधनम्                 | ****         |         | ३१६-३२७     |  |  |
| <b>इ</b> न्मन्त्रसाधनप्रकारः     |              |         | 388         |  |  |
| शिरोमन्त्रसाध <b>न</b> प्रकारः   | ••••         |         | ३१७         |  |  |
| शिखामन्त्रसाधनम्                 | ••••         |         | 386         |  |  |
| कवचमन्त्रसाधनम्                  | •••          |         | ३२०         |  |  |
| नेत्रमन्त्रसाधनम्                |              |         | 3 7 3       |  |  |
| अस्त्रमन्त्रसाधनम्               |              | ••••    | ३२९         |  |  |
| पटलः ( २९ ).                     |              |         |             |  |  |
| वक्रमन्त्रसाधनप्रकारः            | •••          | •••     | ३२७-३४०     |  |  |
| र्गुसिंहव <b>ऋमन्त्रसाधनम्</b>   |              | •       | ३२७-३३१     |  |  |
| कपिल्मन्त्रसाधनम्                | ****         |         | ३३१–३३५     |  |  |
| वराहमन्त्रसाधनम्                 |              | ••••    | ३३५-३४०     |  |  |

| г. |     |   |   | ٦  |
|----|-----|---|---|----|
| 1  | - 4 | 5 | a |    |
|    |     | • | • | -1 |

|              | पत्रसङ्ख्या |  |  |  |  |  |
|--------------|-------------|--|--|--|--|--|
|              |             |  |  |  |  |  |
| ).           |             |  |  |  |  |  |
|              | ३४१-३४९     |  |  |  |  |  |
|              | <b>३</b> ४१ |  |  |  |  |  |
|              | ३४२         |  |  |  |  |  |
|              | ३४३         |  |  |  |  |  |
|              | ३४४         |  |  |  |  |  |
|              | 388         |  |  |  |  |  |
|              | . ३४५       |  |  |  |  |  |
|              | ३४६         |  |  |  |  |  |
|              | ३४७         |  |  |  |  |  |
|              | ₹8<         |  |  |  |  |  |
| पटलः ( ३१ ). |             |  |  |  |  |  |
|              | . ३४९-३५३   |  |  |  |  |  |
|              | ३४९         |  |  |  |  |  |
|              | ३५०         |  |  |  |  |  |
|              | ३५०         |  |  |  |  |  |
|              | ३५०         |  |  |  |  |  |
|              | ३५१         |  |  |  |  |  |
|              | ३५१         |  |  |  |  |  |
|              | ३५२         |  |  |  |  |  |
| ).           |             |  |  |  |  |  |
|              | ३५३-३५६     |  |  |  |  |  |
|              | ३५६–३५९     |  |  |  |  |  |
|              | . ३५८       |  |  |  |  |  |
| पटलः ( ३३ ). |             |  |  |  |  |  |
|              | ३५९-३६8     |  |  |  |  |  |
|              | 7 4 7       |  |  |  |  |  |
|              | ३६९         |  |  |  |  |  |
|              |             |  |  |  |  |  |